अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

नरे”ा मेहता के काव्य में सांस्कृतिक मूल्य

डॉ.विद्या शि”ा”ाखर ि”ांदे

आय.सी.एस.कॉलेज,खेड

रत्नागिरी,415709

भारतीय संस्कृति –

भारतीय संस्कृति की एक सर्वसम्मत परिभाषा करना नितांत कठिन है क्योंकि भारत वर्ष,इतिहास की दीर्घकालीन परंपरा में अनेक धर्म,जातियों एवं संस्कृतियों का संगमस्थल रहा हैं जिसे हम भारतीय संस्कृति कहते हैं वह आदी से अंत तक न तो आर्यों की रचना हैं औंर न द्राविडों की,उसके भीतर अनेक जातियों का अ”ादान हैंयह संस्कृति रसायन की प्रक्रिया से तैयार हुई हैं और इसके भीतर अनेक औंषधियों का रस भरा हैंइसी कारण भारतीय संस्कृति में अनेक प्रकार की वि”ाषताएॅ विद्यमान हैं

धर्म,नैतिकता,सत्य,असत्य,पाप–पुण्य,आस्था–अनास्था आदी के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति की दो वि”ाषताएॅ हैं –

1. समन्वय की भावना
2. मुक्ति या मोक्ष की अवधारणा

यहॉ संस्कृति के घटक तत्वो में धर्म,अहिंसा,श्रद्धा,सत्य,यज्ञ,त्याग,तप,देवपूजा,दान,मंत्र, सहिष्णुता,समत्वदृष्टी आदी का वर्णन किया है भारत की संस्कृति बहुत समृद्व है इसने अपना संरचना बडी उदारता तथा वि”ााल हदयता से की है हमारी संस्कृति में अनेक तत्वों का ऐसा योग है जो इस और भी महनीय बना देते है

नरे”ा मेहता के काव्य में सांस्कृतिक मूल्य–

नरे”ा मेहता भारतीय अस्मिता और सांस्कृतिक संम्पन्नता के कवि हैं हमारे द”ान, धर्म, संस्कृत आदी ने आत्मबोध और चेतना का विकास किया है। उनके काव्य की जमीन समसामायिक स्थितिंयों को गहरा स्प”ा करती है। उसमें युग संदर्भो के अनुकूल जीवन के सच्चाई की पकड,चेतना और मनुष्य के दु:खों से टकराने की ताकत है। प्राचीन इतिहास उनकी संस्कृति केंन्द्रीत का एक महत्वपूर्ण विषय है। इसीलिए उनका काव्य भारतीय सांस्कृतिक सम्पन्नता का काव्य हैं वह मानवीय विकास के हर पहलू को साथ लेकर चलता हैं

नरे”ा मेहता की सांस्कृतिक चेतना की सबसे केंन्द्रीय बात उनकी उदारता हैं भारतीय संस्कृति और भारतीय चिंतन यह उनके काव्य की वि”ोषता है। प्रति”ोध,हिंसा, संकिर्णता जैसी भावनाओं से उपर उठकर उदारता की तरफ अपनी भावनाओं को उन्होंने केन्द्रीभूत किया है। महाकरुणा और विराट संवेदना उनके काव्य की वि”ोषता है।

सांस्कृतिक मूल्य –

''संस्कृति किसी दे”ा,जाति अथवा मानव के आंतरिक गुणों की समष्टि का नाम है जोउसके आचार,विचार,कार्यकलाप तथा जीवन पद्धतियों में व्यक्त होता है। मानव अपने संस्कृति गुण मूल्यों के कारण एक दूसरे के चरित्र,धर्म,नैतिकता आदी में भिन्न व्यक्तित्ववाला होता हैं प्रत्येक जाति,दे”ा अथवा व्यक्ति के भी भिन्न परिवे”ा में चलने के कारण भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक मूल्य होते हैं सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति हमारे भावों, विचारों एवं व्यवहारों द्वारा होती हैं हमारी संस्कृति के गुण या मूल्य हैं –दया, प्रेम,करुणा,सहानुभूती,सत्य,अहिंसा, परोपकार,आस्था,श्रद्धा, क्षमा, उदारता,वि”वबंधुत्व की भावना, त्याग,संयम,सदाचार आदी'' 1

मनुष्य अपने जीवन में चेतना का अनुभव करें यही नरे”ा मेहता की आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक चेतना का उद्दे”य हैं उनका काव्य मानवीय विकास के हर पहलू को साथ लेकर चलता हैं इनका काव्य भारतीय सांस्कृतिक संपन्नता का काव्य हैं

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

कर्म मूल्य –

कर्म हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं कर्म हीन जीवन निष्प्राण माना जाता हैं अर्जुनको उपदे"ा देते हुए श्रीकृष्ण भी कर्मयोग का उपदे"ा देते हैं आगे चलकर फल की चिंता मत करो ऐसा भी कहते हैं मानव को हर दम कर्तव्य करते रहना चाहिए कर्मो के आधारपर ही मनुष्य को गति मिलती हैं कर्म मानव जीवन का शा"वत सत्य हैं भगवान ने मनुष्य रुप लेकर कर्म को ही श्रेष्ठतव प्रदान किया हैंहमारे कर्मो का फल हमें ही भोगना पडता हैं अच्छे बुरे कर्मो के आधारपर ही मनुष्य जीवन व्यतीत करता हैं कर्मो के आधारपर ही सुख दुख जीवन का हिस्सा बनते हैं

नरे"ा मेहता के काव्य में भी कर्म मूल्य को महत्व दिया गया है क्योंकि कर्म हमारी संस्कृति का ही घटक तत्व हैं कर्म मनुष्य जीवन से बॅधा हैं '"ाबरी' खंडकाव्य यह नरे"ा मेहताजी का सबसे श्रेष्ठ कर्म मूल्य का खंडकाव्य हैं शबरी निम्नवर्गीयता को कर्म दृष्टी के द्वारा वैचारिकता प्रदान करती हैंवैसे समाज में किसी का व्यक्तिगत मत नहीं चलता,अतः शबरी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता हैं फिर भी वह अपनी उसी लगन के साथ अपने कर्म पथ में बराबर चलती रहती हैं परिणामस्वरुप राम स्वयं उसे द"ान देकर कृतार्थ करतें हैं मतंग साधु शबरी के अध्यात्म गुणों को देखकर कहतें हैं कि पिछले जन्म के सत् कर्मो के कारण ही शबरी निम्न जाति की होती हुई भी ज्ञान को प्राप्त हो जाती हैं यह कर्म की महानता हैं कि इन्सान से जैसा चाहते है वैसा करवाते हैं क्योंकि पिछले जन्म के लिए किये गए कर्मो के आधारपर ही इस जीवन में मनुष्य काम करता हैं इसलिए कवि कहतें हैं –

'कितने ही लघु हो
इससे क्या?
सार्थक हो
स्वत्व है हमारा
कर्म –' 2

हम कितने भी छोटे हो फिर भी हमारा कर्म हमें उच्चतम बना देता हैं कर्म पर ही मनुष्य की महानता सिद्व हो जाती हैं नरे"ा मेहता कर्म"ील जीवन के वि"वासी हैं वह चाहते हैं कि कोई भी दिन तिरस्कृत और उपेक्षित न रहें,तभी हमें प्रका"ा"ील जीवन का सही तत्व समझ में आएगा इसीलिए वह कहतें हैं –

''घासों के फूलों से विनयी हो –

खोजो,

उस दिन को

जो सम्यक हैं –

प"चमी तट खोजो,

मत जान वो अपमानित,उपेक्षित,तिरस्कृत

देवों के य"ा से उजले उस दिन को

ढाको,विनयी........'' 3

हमें नम्रता से हर कर्म करना होगा। क्योंकि प्रकृति का हर तत्व झुककर अपने काम के प्रति इमानदार रहता हैं उसी तरह हमें भी लीन होकर कर्मरत रहना हैं वृक्ष जिस तरह फल,फूलों से लदकर झुककर त्याग की भावना को अपनाता है उसी तरह हमें झुककर काम के प्रति निष्ठा रखनी होगीं।

अगर मनुष्य अपने कर्म और वचनों पर स्थिर रहता हैं तो उसे कोई भी ताकत विचलित नहीं कर सकती। वह अंततः अपने लक्ष्य को जरुर प्राप्त करता है। 'सं"ाय की रात' खंडकाव्य में राम कर्म में वि"वास रखते हैं। गीता में भी कर्म की ही प्रधानता हैं। इसीलिए मनुष्य के कर्म को कोई नहीं छीन नहीं सकता इसीलिए मनुष्य को कर्म में वि"वास करना चाहिए। कवि कहते हैं–

''किन्तु

किन्तु यह असंभव हैं

बन्धु!यह असंभव है

कर्म और वर्चस्व को

छीन सके कोई भी

ज्ब तक हम जीवित है।'' 4

यहॉ कवि राम का कर्म के प्रति अगाध वि"वास प्रकट करतें हैं। इस खंडकाव्य में लक्ष्मण का कर्म पर वि"वास हैं। वे कर्म करने से कभी पीछे नही हटतें। वे लंका की चुनौती को स्वीकार करते हैं और अपने कर्म को पहचानतें हैं। वह युद्व क लिए तत्पर हैं मगर राम के माथे पर पडो चिंता की रेखाएॅ उन्हें स्वीकार नही हैं। वे राम की सेवा करना अपना धर्म और कर्म मानते हैं। उसके लिए रास्तें में आनेवाली हर बाधाओं को पार करने की तत्परता उनमें दिखाई देती हैं। कर्म के अनुरुप ही मनुष्य समाज में य"ा प्राप्ति करता हैं। कर्म करते समय मन में कोई विकार,"ांका या सं"ाय नही होना चाहिए। इसी बात को द"ारथ की छाया राम से कहती है –

''पुत्र मेरे

सं"ाय या शंका नहीं

कर्म ही उत्तर है

य"ा जिसकी छाया हैं

उस कर्म को करो।'' 5

कर्म की छाया य"ा हैं इसीलिए हमें सदा कर्म करते रहना हैं। मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसे वह प्राप्त भी करता हैं। कर्म के अधीन रहकर ही हमें सबकुछ करना हैं। अगर कोई भागता है तो वह मनुष्य नहीं हैं।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अहिंसा का मूल्य –

भारतीय संस्कृति में अहिंसा श्रेष्ठ मूल्य हैं। नरे”ा मेहता के शब्दों में –‘‘मुझे लगता है कि भारतीय,”ोष मानवता से इसी अर्थ में भिन्न है कि हमारी विकास यात्रा हिंसा से अहिंसा की ओर रही है। जबकि शेष मानवता की यात्रा हिंसा से घोर हिंसा की ओर। 6

‘‘ अनेक लोगों की दृष्टी से अहिंसा मात्र एक नीति थी जो एक स”ाक्त राष्ट को एक स”ाक्त राष्ट् शत्रु के समक्ष अस्त्र के रुप में प्रयोग करने को बाध्य था। गांधीजी ने कहा था कि अहिंसा उनके लिए सर्वोच्च आस्था एवं एक मात्र निष्ठा हैं। उनके जीवन का प्राण स्पन्दन हैं। इससे भी आगे बढकर उन्होंने कहा था कि सत्य और अहिंसा का परित्याग करके हमें भारत की स्वतंत्रता भी नही चाहिए। नरे”ाजी के राम जब कहते है कि रक्त से सने हाथों से उन्हें सीता नहीं चाहिए तो उसमें कही पलायन या कायरता का भाव नहीं है। गांधीजी की अहिंसा कायरों की अहिंसा नहीं थी।’’ 7

‘सं”ाय को एक रात’ में राम की अहिंसा के प्रति अनन्य आस्था हैं। राम मानव के रक्त से सनी हुई धरती पर सीता को पाना नहीं चाहते वह तो अहिंसा के मार्ग द्वारा ही अपनी सीता को प्राप्त करना चाहते हैं।राम अपने अहिंसावादी विचारों की नीति लागू न होने पर लक्ष्मण से कहते है –

‘‘तो –
लो समर्पित है तुम्हें
तुम्हारे अज्ञात बलों को
इस क्षण के द्वारा
वृष्टी भीगे उस महाकाल की
समर्पित है यह
धनुष,बाण,खड्ग और f”ारस्त्राण
मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए।’’ 8

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

नरे"। मेहता अपने काव्य के माध्यम से राम की अहिंसा की नीति को वर्णित करते हैं। युद्व का मतलब हिंसा करना और ऐसी विजय राम नहीं चाहते। मतलब है कि आज संसार को युद्व नीति छोडकर शांती का विचार सोचना होगा।

सत्य का मूल्य –

सत्य जब से सृष्टी बनी है तब स`चल रहा है। सत्य और असत्य जीवन के दो पहलू हैं। धर्म में सत्य को ही सत् माना गया है। सतयुग में सत्य को जो स्थान मिला है वो कलीयुग में नही मिला। आज का आधुनिक मानव सच के अलावा झूठ को मानता हैं। परंतु फिर भी सत्य की ही हमे"ाा जीत होती हैं। इसीलिए कहा गया है कि,'सत्यमेव जयते।'

सत्य धर्म,समाज,संस्कृति का ही हिस्सा नहीं हैं,सत्य राजनीति का भी हिस्सा हैं। गांधीजी सत्य,अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने सत्य को ई"वर माना और जीवनभर सत्य के पालन पर बल दिया हैं। उन्होंने सत्य के पालन में पूर्वाग्रह,टालमटोल,दुराव,प्रवंचना या विकृति का कोई स्थान नहीं है। मनुष्य को हमे"ाा वीरतापूर्वक सत्य को धारण करना और सत्य के लिए मर मिटना चाहिए।

नरे"। मेहता की काव्य–कृतियों में सत्य मूल्य की पहचान दिखाई देती हैं। 'सं"ाय की एक रात' खंडकाव्य के राम जब कहते हैं कि मुझे रक्त पर पग धरती हुई सीता नहीं चाहिए तब पता चलता हैं कि सत्य को कभी झुठलाया नहीं जा सकता।नरे"। मेहता ने यहॉ 'बोलने दे चीड को' की कविता में सच को दबाने की को"ि"। के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कवि कहते हैं –

''तुम्हारे प्रार्थना घोषों में

उत्सव जयकारों में

समाचारों में

अभिन्न ही रखें गये।'' 9

इसमें कवि कहते है कि मानव,प्रार्थना घोष,जयकारों में,समाचारों में सत्य की आवाज को दबा रहा है और असत्य के पक्ष में अपना मत दे रहा है। सत्य जब व्यक्ति के घेरे से बाहर निकलकर मानवता के बहुआयामी संदर्भो से जुड जाता है तो वह सत्य मानवता का अथवा मानव के लिए समर्पित सत्य कहलाता हैं।इसी सत्य के लिए राम कहते हैं –

''मैं सत्य चाहता हूँ
युद्व से नहीं
खड्ग से भी नहीं
मनव का मानव से
मैं सत्य चाहता हूँ
क्या यह संभव हैं
क्या यह नहीं हैं।'' 10

सत्य की प्राप्ति भी सहनीय ह।''परात्पर होना'' जिज्ञासा की अंतिम स्थिति हैं क्योंकि सत्य की प्राप्ति दूसरे से प्र"न करके नहीं होती बल्कि जिज्ञासा तभी होती हैं जब सत्य की प्राप्ति होती है। इसी बात को युधिष्ठीर कहते हैं–

'' प्र"न और जिज्ञासा में
अन्तर समझते हो पार्थ!
सत्य की प्राप्ति
दूसरे से प्र"न करके नहीं होती
स्वयं से ही जिज्ञासा करनी होती है
सुख या दुख के स्थान पर
मुझे सदा जिज्ञासा हुई पार्थ।'' 11

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सत्य मूल्य की श्रेष्ठता सर्वोपरिता हैं। सत्य दे"।–काल इतिहास इन सबसे उँचा हैं।यहॉ तक कि यह मूल्यों में भी श्रेष्ठ हैं।

त्याग का मूल्य –

त्याग हमारी संस्कृति का घटक तत्व हैं। हमारी संस्कृति द्वारा दिए गए संस्कारो के कारण मानव के अंदर त्याग की भावना का संचय हुआ हैं। त्याग कई रुपों में होता हैं। कभी मानव परिवार के लिए त्याग करता हैं,कभी दूसरों के लिए,कभी दे"। के लिए तो कभी समाज के लिए मनुष्य अनेक रुपों में अपने अंदर समर्पण की भावना को उजागर करता हैं। नरे"। मेहताजी ने अपने काव्य में इस मूल्य को उद्घाटीत किया हैं। नरे"। मेहता की 'निवेदम्' कविता में कहते है–

'' समर्पण को व्यक्तिवेदी दो

बिना जिसके

गर्व है यह माथ

स्कन्ध का आधार दो–

व्यक्तिवेदी दो समर्पण को।'' 12

कवि के अनुसार हमारे इस समर्पण भाव को ऐसी वेदी दो जिस पर हम गर्व करें और जो हमारा आधार बने अर्थात हमें ऐसी व्यक्तिवेदी दो जो हमारी समर्पण त्याग की भावना को उपर उठा सकें। हमने जो त्याग किया है वह निष्फल न हो जाए। महाप्रस्थान के 'स्वाहापर्व' पर यात्रा के समय धर्मराज युधिष्ठिर द्रोपदी के साथ सांसरिक मोह माया से परे जो पारलौकिक जीवन के संबंध में चर्चा करते हुए कहते हैं–

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सारे वर्णगंध

जन मन पर से भी उतर जाते है

तब अन्तर के

देवात्मा हिमालय की

श्वेत देव भूमि जाग्रत होती है कृष्णा!

निर्भय होना ही हिमालय होना है और

अनासक्ति ही स्वर्ग हैं।

हिमालय ही आत्मा है।'' 13

त्याग हमारी संस्कृति का श्रेष्ठतम मूल्य हैं। हमारी संस्कृति ने हमें जो संस्कार दिए हैं उनमें त्याग की भावना को महत्व दिया गया हैं। कवि नदी के भीतर त्याग भावना को देखते है। क्योंकि नदी केवल देना चाहती हैं। यह उसका अपना धर्म हैं। 'स्वतंत्र' कविता में अपना जीवन अपना समझकर दूसरों को समर्पित कर देने की बात को कवि ने कहा हैं। हमें दूसरों का दुख समेट लेना चाहिए। मानव जीवन सबसे महान माना गया हैं। जो मनुष्य त्याग की भावना को अपने अंदर समेटकर अपना जीवन दूसरों पर न्यौछावर कर देता है वही महान माना जाता हैं।इसीलिए कवि के शब्दों में –

''जब रहूँ

समर्पित रहूँ

केवल अन्य को।'' 14

गन्ध कविता में गुलाब के फूल की त्याग की भावना का कितना सुंदर वर्णन है। गुलाब अपनी गंध को अपनी नहीं कहता बल्कि दूसरे की कहता हैं।वह अपने लिए नहीं बल्कि अपना सुख दूसरे के लिए न्यौछावर कर देता हैं। त्याग मूल्य में ही 'आत्मसमर्पण' की भावना को कवि ने फूल द्वारा सांस्कृतिक दृष्टिकोन में रचित किया हैं। व्यक्ति में अच्छे बुरे गुण होते हैं मगर मरने के बाद वह अपने गुणों को समर्पित करता हैं। इसी

प्रकार फूल भी मुरझाने से पहले दूसरों को गंध देकर चला जाता हैं।त्याग में समर्पण की भावना महत्वपूर्ण हैं।

करुणा का मूल्य–

भारतीय संस्कृति का एक मूल्य 'करुणा' भी हैं।उसी करुणा में यह भाव शक्ति है कि वह भयानक दुख को महाकरुणा में डूबो कर शांत कर देती हैं। नरे"ा मेहता इस करुणा से भरे थे इसका द"ान राम मुद्रा में ही हो जाता हैं।तुलसी के राम चाहे शील,सौंदर्य और शक्ति के अपूर्व समन्वय रहे हो,परंतु 'सं"ाय की एक रात' में राम का अत्यंत करुणामय स्वरुप चित्रित हुआ हैं। नरे"ाजी ने राम के व्यक्तित्व में इस महाकरुणा की अवतारणा का चित्रण बडे ही मार्मिक ढंग से किया हैं।राम के भीतर इसी महाकरुणा का ज्वार उमडता हैं तब वह कहते हैं–

''यह चेतना
यह बोध
अमोही प्रज्ञात्मकता की
अग्नि यह
कौन से अभिषेक जल से शांत हो,
समाहित व्यक्तित्व की
यह ज्वाल
अनुखन दाहती है!बंन्धु!'' 15

इसी करुणा से भरे कवि की आत्मा अपने सृजन के लिए आत्मविभोर होती हैं। तभी युधिष्ठिर अर्जुन से कहते है–

''व्यक्ति हो"ा!
मानवीय वान स्पतिकता होगी और
उदात्त करुणा,प्रज्ञा होगी पार्थ।।'' 16

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

कवि ने यहॉ युधिष्ठिर के व्यक्तित्व के केंद्र में करुणा को प्रतिष्ठित किया हैं वह सब कुछ छोड सकते हैं।परंतु करुणा नहीं क्योंकि करुणा उनका धर्म हैं।जिस संस्कृति में करुणा एक आन्तरिकता मूल्य नहीं बन सकती उसमें व्यक्ति की सत्ता पर समाज और समाज के नाम पर राज्य का वर्चस्व होता चला जाएगा और सारे मानवीय मूल्य ध्वस्त हो जाएगा। 'करुण मूल्य' में युधिष्ठिर करुणा के बदले स्वर्ग को भी त्यागने के लिए तत्पर है। उनके मुख से निकले यह शब्द कितने प्रासंगिक हैं–

''सृष्टी करुणा के बदले

मैं स्वर्ग भी नहीं स्वीकारुंगा ।।'' 17

धर्म एवं ई"वर के प्रति मूल्य–

ळमारी संस्कृति आद"िवादी संस्कृति हैं। धर्म भावना एक ऐसी व्यापक सांस्कृतिक चेतना हैं। जिसका विस्तार इहलोक से परलोक तक हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति धर्म और सामाजिक रुढियों से अनुप्राणित थी। परंतु कालांतर में धर्म भावना ने सभी जीवन के पहलूओं को समेट लिया। जैसे जैसे समय बीतता गया प्राचीनता से आधुनिकता की ओर मानव बढने लगा वैसे ही उसकी सोच में परिवर्तन आने लगा। वह धर्म से हटकर तर्क में वि"वास करने लगा। नये मूल्य निर्माण होने लगे। संस्कृति में नया परिवर्तन आने लगा। धर्म अब पहले की तरह सामाजिक रुढियों से ही नही बल्कि राजनीतिक पक्ष से जुड गया। अब तो धर्म राजनीतिज्ञों के लिए खिलौने का काम करता है। अपने स्वार्थ के लिए व्यक्ति धर्म का सहारा लेकर भाई–भाई में दरार निर्माण करता हैं। दे"ा का बंटवारा धर्म के कारण हो गया हैं। प्राचीन युग में माना जाता था कि,''धर्म मानव को सत् कार्य की ओर प्रेरित करता हैं।इसी से मानवता का विकास होता ह। साथ ही यह वि"वबंधुत्व की भावना की ओर अग्रेसर होता हैं। वास्तव में जिससे मनुष्य की रक्षा और उन्नति हो वही धर्म हैं। धर्म एक कानून है जो मानवता का पूर्ण विकास करता हैं। मनुष्यता का पथप्रद"िक हैं।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

आधुनिक काल के नरे"ा मेहता के काव्य में धर्म की प्रधानता रही हैं। आधुनिकता का बोध करवाते हुए भी नरे"ा मेहता ने धर्म की महानता की ओर ध्यान दिलाया हैं। इनके काव्य में धर्म के विभिन्न रुप देखने को मिलते हैं। इनके स"ाय की एक रात में राम धर्मपरायण हैं। 'महाप्रस्थान' में युधिष्ठिर धर्म के प्रतिक हैं। शबरी में शबरी का चरित्र धर्म की अभिव्यक्ति करता हैं। 'महाप्रस्थान' के एक प्रसंग में अर्जुन धर्मराज से प्राकृतिक धर्म की श्रेष्ठता का वि"लेषण करते हैं– '' प्राकृतिक धर्म ही सबसे बडा धर्म हैं। जिसका भेदन नहीं किया जा सकता। वे समाज को धर्म के नियमों पर आधारित मानते हैं। वे धर्म का निर्माण राज्य में व्यक्ति की प्रज्ञा को मानते हैं। उसके उपर युधिष्ठिर कहते है–

''कोई शस्त्र नहीं पार्थ
जे प्रकृति का भेदन कर सके
प्रकृति के धर्म का भेदन करना
परात्पर होना हैं
और वह शस्त्र से संभव नहीं।'' 18

भारतीय संस्कृति में धर्म के संबध में नरे"ा मेहता कहते है–''जातीय उर्ध्वोन्मुखी अस्मिता की वाहिका धर्म दष्टी हुआ करती हैं। मैं पुनः स्पष्ट कर देना चाहता हूॅ कि धर्म से तात्पर्य किसी संप्रदाय, गढ या संस्थान से नहीं है। धर्म प्रकृति की भॉति उदार एवं असंग होता हैं। काव्य और साहित्य के लिए मैं इसी धर्म की अस्मिता का पक्षधर हूॅ।'' 19

धर्म का वहन युधिष्ठिर करते हुए कहते है–

''धर्म के इस उदार हिम राज्य में
दि"ााओं तक आका"ा में अतिरिक्त
अन्य कोई आच्छद
स्वीकृत नहीं होता कृष्ण।'' 20

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

धर्म उदार हैं। धर्म हिम की तरह श्वेत हैं। धर्म आका"ा की तरह व्यापक हैं। धर्म हमारी संस्कृति का मूल घटक हैं। धर्म के सहारे यह संसार टिका हैं। धर्म के सहारे समाज का निर्माण होता हैं। धर्म स्वतंत्र हैं जबकि राज्य संकुचित हैं। अतः धर्म का मूल्य राज्य से नहीं बुद्धी से होता हैं।

स्वर्गारोहण के स्वर्गद्वार पर पहुंचने से पहले ही द्रोपदी हिम में धॅस जाती हैं तो भी भीम युधिष्ठिर से प्र"न करते है िकवह धर्म के पथ पर पहुंचने से पहले ही क्यों हिम में धॅस गई? तब युधिष्ठिर कहते हैं–

''क्योंकि वह सांसरिकता थी

पत्नी वह सबकी थी भीम

किंतु वह मनसा

प्रिया अकेले पार्थ की ही रही

विभाजित व्यक्तित्व

वह किसी का भी हो

धर्म नहीं स्वीकार किया करता भीम

धर्म की प्रकृति हैं।

शव नहीं स्वीकार किया करता।'' 21

इस तरह धर्म का महत्व नरे"ा मेहता अपने काव्य द्वारा स्पष्ट करते हैं। धर्म में स्वार्थ की बातें कभी समाई नहीं जाती क्योंकि वह निरपेक्ष होता हैं।

उपसंहार –

नरे”ा मेहताजी के काव्य में विविध सांस्कृतिक मूल्य दिखाई देते हैं। उसमें कर्म, अहिंसा, सत्य,त्याग तथा धर्म के मूल्यों की चर्चा काव्य के उदाहरण देकर करने का प्रयास किया हैं इसके अलावा इनके काव्य में अनेक मूल्य स्पष्ट रुप में प्रतिबिंबित होते हैं। उन सब मूल्यों को तला”ाा जा सकता हैं। लेकिन शोध पेपर की मर्यादा का ध्यान रखकर उसे संक्षेप में व्यक्त किया गया हैं। नरे”ा मेहताजी भारतीय अस्मिता और सांस्कृतिक संपन्नता के कवि हैं। हमारे द”ीन,धर्म, संस्कृति आदी ने आत्मबोध और चेतना के उच्च ि”ाखरों को सदैव स्प”ी किया हैं। उनके काव्य की जमीन समसामायिक स्थितियों को गहरा स्प”ी करती हुई शा”वत जीवनमूल्यों को तला”ाने के लिए बाध्य करती हैं। उसमें आज के युग संदर्भो के अनुकूल जीवन के सत्य को पकड और अमानवीय हालातों से टकराने की ताकत हैं। प्राचीन इतिहास उनकी संस्कृति का मुख्य केंद्र हैं। इसीलिए उनका काव्य भारतीय संस्कृति की संपन्नता का काव्य हैं। मानवीय विकास के हर पहलू को लेकर चलनेवाला इनका काव्य हैं। नरे”ा मेहताजी कही सांस्कृतिक चेतना की सबसे केंन्द्रीय धारा उनकी उदारता हैं। संकिर्णता,प्रति”ाोध,हिंसा जैसी भावनाओं से उठकर महाकरुणा और विराट संवेदना की भावना को जागृत करना इनके काव्य की महानता हैं। सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति हमारे भाव, विचार तथा व्यवहार द्वारा होती रहती हैं। वही मानव की संस्कृति हैं। आधुनिक काल में मानव संस्कृति से भटक रहा हैं। उसकी सोच नैतिक पतन की ओर जा रही हैं। उनके मन पर हमारे इतिहास की संस्कृति का भाव बताकर वह आज के युग को परिवर्तित करना चाहते हैं। आज का मनुष्य सच्चाई को पहचानकर उसे अपनाकर सस्कृति की धरोहर को समझ ले यही उनके काव्य का उदे्”य हैं।कहने का आ”ाय यह हैं कि नरे”ा मेहताजी का काव्य इसी सुदृढ भूमिका पर खडा हैं। इनका काव्य आज के और आनेवाले युग के लिए पथप्रद”ीन जरुर करेगा यह वि”वास लगता हैं।

———————————————————————————

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

संदर्भ ग्रंथ——

1	सं”ाय की एक रात——	नरे”ा मेहता	पृष्ठ 14
2	देखना एक दिन	वही	पृष्ठ 104
3	वनपारबी सुनो	वही	पृष्ठ 56
4	सं”ाय की एक रात	वही	पृष्ठ 17
5	प्रवाद पर्व	वही	पृष्ठ 23
6	नरे”ा मेहता:कविता की उर्ध्वयात्रा	राजकमल राय	पृष्ठ 79
7	सं”ाय की एक रात	नरे”ा मेहता	पृष्ठ 16
8	बोलने दो चीड को	वही	पृष्ठ 55
9	देखना एक दिन	वही	पृष्ठ 22,23
10	महाप्रस्थान	वही	पृष्ठ 105
11	प्रवाद पर्व	वही	पृष्ठ 32
12	वनपारबी सुनो	वही	पृष्ठ 42
13	देखना एक दिन	वही	पृष्ठ 87
14	वही	वही	पृष्ठ 21
15	उत्सवा	वही	पृष्ठ 48
16	महाप्रस्थान	वही	पृष्ठ 137
17	वही	वही	पृष्ठ 144

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

18 वही वही पृष्ठ 104

19 वही वही पृष्ठ 14

20 वही वही पृष्ठ 75

21 वही वही पृष्ठ 95